अपराजिता : वर्ष 53 अंक 01: 2025
स्थापना वर्ष : 1972 (प्रिंट), 2025 (ऑनलाइन)

जैनेन्द्र के उपन्यास साहित्य में नारी की मनोवैज्ञानिक समस्या

डॉ सुभाष सिंह
असिस्टेंट प्रोफ़ेसर, हिन्दी विभाग

जैनेन्द्र के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता के सन्दर्भ में अनेक प्रकार की व्याख्यायें दी गई हैं। मनः चिकित्सा के ज्ञान के बहुत से पहलू विश्लेषण में इतने सटीक दिखाई देते हैं कि आश्चर्य होता है। उधर जैनेन्द्र अपनी ओर से मनोविज्ञान या मनस्तव से अज्ञानता प्रदर्शित करने में कुछ कमी नहीं रखते। जैनेन्द्र जी ने स्वयं लिखा है आज मनोविज्ञान का दौर है, एक व्यक्ति के मन को कुएं की भांति लेकर उसके अंधेरे में दृष्टि गड़ाकर नीचे उतरने का प्रयास किया जाता है। समझा जाता है कि ऐसी मनोवैज्ञानिक रचनायें व्यक्ति देती हैं। मुझे तो ऐसी मनोवैज्ञानिक रचनाओं की तुक समझ में नहीं आती। अपनी खातिर मन की गुत्थियों को खोलना अध्यवसाय है। कि व्यसन? इस तथ्य का अन्वेषण ही प्रस्तुत शोध पत्र का प्रतिपाद्य है।

बीसवीं शताब्दी में साहित्य के क्षेत्र में मनोविज्ञान का प्रचलन विशेष महत्व का विषय बन गया। मनोविज्ञान मन का विज्ञान है और मनुष्य की अर्न्तनिहित वृन्तियों पर पर्याप्त प्रकाश भी डालता है। इसीलिए यह साहित्य के लिए विशेष उपादेय भी सिद्ध हुआ है।(राय, पृ. 416-417) जिस मानस प्रक्रिया का विश्लेषण मनोविज्ञान का उद्देश्य उससे कला या साहित्य का अन्यतम सरोकार हैं सभी जानते हैं कि फ्रायड ने मनुष्य की प्रकृति को उसकी अंतः सत्ता में देखने के उद्देश्य से जो स्थापनायें की थी वे केवल मानसिक विचारों की जांच-पड़ताल में सहायक नहीं हुई। बल्कि उन्होंने मानव आचरण को पाप-पुण्य की कठोर सरलीकृत धारणाओं से बाहर जाकर परखने की दृष्टि भी दी। मौलिक वृत्तियों के दमन से (अवश्य ही जिसमें यौन वृत्ति सबसे महत्वपूर्ण है) व्यक्ति और समाज के विकास की सहज गति कुंठित होती है और वे जटिलतायें उपस्थित होती हैं। जो सर्जनात्मक इच्छाओं, प्रेरणाओं को अधिक गहराई में जाकर उद्विग्न करती है। एडलर के विचारों (हीनता ग्रंथि और क्षति पूर्ति) और युंग के अभिप्रायों (सामुहिक अचेतन) आदि ने मानव स्वभाव या व्यक्तित्व की दो भिन्न दिशाओं में अन्वेषित करने की चेष्टा की है। एक और यौन संवेदन से बाहर अहं की वृत्ति को समझने की कोशिश हुई, दूसरी ओर अंतर्मुखी और बहिर्मुखी व्यक्तित्व प्रकाशों के निरूपण की दिशा में प्रयत्न किया गया। बिडंबना यह है कि साहित्यिक आलोचक मनोवैज्ञानिक उपन्यासों का अध्ययन करने के लिए विशुद्ध मानस शास्त्रीय युक्तियों पर निर्भर है जबकि मनोवैज्ञानिक उपन्यास मानसशास्त्रियों के लिए प्रयोजनीय नहीं है।(श्रीवास्तव,पृ. 85-86)

मनोवैज्ञानिक उपन्यासों की पहचान को सबसे पहले पत्र शैली में लिखे गये उपन्यासों से जोड़ा गया, जिनमें पाठक पत्रों के बहाने चरित्रों के अंतः व्यापार से जुड़ता चला जाता है। देवराज उपाध्याय लिखते हैं कि ‘‘मानव मस्तिष्क में प्रवाहित होने वाली चेतना को अपने प्रवहमान एवं प्राणवान रूप में अर्थात उस रूप में पाठकों के सामने रखने के लिए उपन्यास में मनोवैज्ञानिकता का प्रयोग होता है।(वही पृ. 87)

देवराज उपाध्याय के अनुसार ‘‘वास्तविक अर्थ में मनोवैज्ञानिक उपन्यास वे हैं जिनमें भावनाओं के पूर्व वाचित स्तर को अपनी वर्ण्य वस्तु का उपजीव्य बन गया हो। उनकी दृष्टि में यह वह क्षेत्र है जहां जैनेन्द्र अग्रणी हैं। (वही)

जैनेन्द्र के उपन्यासों में मनोवैज्ञानिकता के सन्दर्भ में अनेक प्रकार की व्याख्यायें दी गई हैं। मनः चिकित्सा के ज्ञान के बहुत से पहलू विश्लेषण में इतने सटीक दिखाई देते हैं कि आश्चर्य होता है। उधर जैनेन्द्र अपनी ओर से मनोविज्ञान या मनस्तव से अज्ञानता प्रदर्शित करने में कुछ कमी नहीं रखते। जैनेन्द्र जी ने स्वयं लिखा है आज मनोविज्ञान का दौर है, एक व्यक्ति के मन को कुएं की भांति लेकर उसके अंधेरे में दृष्टि गड़ाकर नीचे उतरने का प्रयास किया जाता है। समझा जाता है कि ऐसी मनोवैज्ञानिक रचनायें व्यक्ति देती हैं। मुझे तो ऐसी मनोवैज्ञानिक रचनाओं की तुक समझ में नहीं आती। अपनी खातिर मन की गुत्थियों को खोलना अध्यवसाय है। कि व्यसन ?(कुमार पृ. 199)

मनोविज्ञान को साध्य मानकर चलने में जो खतरे हैं जैनेन्द्र बहुत पहले उनके आगाह हैं। जैनेन्द्र के अनुसार ''उपन्यास मनोविज्ञान का बंधुआ नहीं। उपन्यास उसके पीछे लगा चले यह दूसरी बात है, उपन्यास का लक्ष्य ऊँचा है। जीवन को स्फूर्ति देकर उसे उर्ध्वगामी बनाना उसका काम है और यदि जीवन अपनी जकड़ से छूटे और ऊपर उठने में समर्थ हो।(वही पृ. 170)

जैनेन्द्र के उपन्यास सोद्देश्य हैं, उन्होंने मनोविज्ञान के सहारे नारी जीवन के कतिपय शाश्वत सत्यों का उद्घाटन किया है।

जैनेन्द्र ने अपने उपन्यास साहित्य में नारी पात्रों के मानसिक द्वन्द का चित्रण किया है सुखदा, सुनीता, मृणाल, कल्याणी आदि सभी पात्र मानसिक द्वन्द्व से गुजरते हैं और उसी में उनके चरित्र सम्बन्धी अनके तत्व प्रकट हो जाते हैं। मनोग्रन्थियों का चित्रण लेखक ने विशेष उत्साह से किया है। सुनीता, त्यागपत्र, विवर्त, कल्याणी आदि उपन्यासों में जैनेन्द्र ने मनोग्रंथियों का सफल चित्रण किया है। त्यागपत्र उपन्यास में मृणाल को परिवार द्वारा मिली अस्वीकृति के कारण उसका अहम् शीला के भाई से हुए सम्बन्ध में आश्रय ढूढ़ता है किन्तु इस सम्बन्ध पर व्यक्त आपत्यिाँ उसके काम को दमित व मन को कंुठित कर देती हैं।

जैनेन्द्र के उपन्यास साहित्य में अधिकांश नारी पात्रों में सेक्स, अवचेतन, अहम्, अभुक्ति, आत्मपीड़न और कुंठा जैसा मनोविकृति की प्रवृत्तियों दिखाई देती हैं। इस दृष्टि से अध्ययन करते हुए जैनेन्द्र को ''गेस्टाल्टवादी उपन्यासकार'' की संज्ञा दी गई है।(उपाध्याय,पृ. 196)

चेतन अहम् और अवचेतन का संघर्ष ही जैनेन्द्र के यहाँ घर और बाहर का संघर्ष है उदाहरण के लिए सुनीता का हरिप्रसन्न के लिए झुकाव। मृणाल का विवश परिस्थितयों के कारण कोयले वाले के साथ सम्बन्ध, कल्याणी का पति से दुराव, सुखदा लाल के प्रति समर्पण करना जैसी स्थिति का हवाला दिया जा सकता है।

जैनेन्द्र के उपन्यास साहित्य में मनोवैज्ञानिकता के सम्बन्ध में अध्ययन करने से ज्ञात होता है कि उनके नारी पात्र समर्पणशील हैं। उनके व्यक्तित्व हीन नारी पात्रों की अपनी जटिल समस्यायें हैं। जैनेन्द्र के उपन्यास साहित्य में आत्मपीड़ा एवं पराजय की व्याख्या की गई हैं।

सन्दर्भ

राय, सच्चिदानन्द राय: हिन्दी उपन्यास: सांस्कृतिक एवं मानववादी चेतना

श्रीवास्तव, परमानन्द: जैनेन्द्र और उनके उपन्यास

कुमार, जैनेन्द्र: साहित्य का श्रेय और प्रेय

उपाध्याय, देवराज: आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य और मनोविज्ञान

* * *